

वेयणामहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘दादूण किञ्चूणध्दरुवं दरिसेयव्वं । एदं भागहारमिह अवणिदे अवणिदसेसं वग्गसलागाणं बेत्तिभागा होंति । एदेहि गुणहाणिमोवट्टिदे रुवाहियपक्खेवरुवसहिदलध्दमागच्छदि । अधवा किञ्चूणध्दरुवं एवं वा आणेदव्वं । तं जहा- वग्गसलागाणं बेत्तिभागे विरलिय गुणहाणि समखंडं कादूण दिण्णे रुवं पडि ओवट्टणरुवपमाणं पावदि । पुणो एत्थ रुवाहियपक्खेवरुवाणं अवणयणं (ताप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्यो: ‘रुवाहिय पत्ते खेत्तरुवाणमवणयणं’ इति पाठः । मुद्रित प्रतौ ‘रुवाहियपक्खेवाणं’ इति पाठः ।) कीरमाणे भागहारवड्ढी कीरदे । तं जहा- तेहि चेव रुवाहियपक्खेवरुवेहि एगरुवधरिदमोवट्टिय हेट्ठा विरलिय उवरिमएगरुवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे रुवाहियपक्खेवरुवाणि पावेंति । पुणो एदेण पमाणेण उवरिम-सव्वरुवधरिदेसु अवणिदे अवणिदसेसं लध्दपमाणं होदि । पुणो अवणिददव्वं सेसपमा-णेण कीरमाणे रुवूणेहेट्ठिमविरलणमेत्ताण जदि एक्का पक्खेवसलागा (अ-काप्रत्यो: ‘एक्को पक्खेवसलागा’, ताप्रतौ ‘एक्को पक्खेवसलागो इति पाठः ।) लब्धदि तो वग्गसलागबेत्तिभागाणं किं लभामो त्ति रुवूणं कीरमाणे छेदमेत्तमवणेदव्वं । अवणिदे हेट्ठा उवरिं च रुवाहियपक्खेवरुवाणि लध्दं च होदि । एदेण भागे हिदे हेट्ठिमछेदो वग्गसलागबेत्तिभागाणं गुणगारो होदि । एवं गुणिदे किमेत्थुप्पण्णे (मुद्रित ‘प्रतौ प्पण्णं’ इति पाठः ।) त्ति ण णव्वदे । तेण वग्गसलाग-

< पूर्वके समान देकर कुछ कम आधे रुपको दिखलाना चाहिये । इसको भागहारमेंसे कम करनेपर शेष वर्गशलाकाओंके दो त्रिभाग होते हैं । इनसे गुणहानिको अपवर्तित करनेपर एक अधिक प्रक्षेप रुपों सहित लब्ध आता है । अथवा, कुछ कम अर्ध रुपको इस प्रकारसे लाना चाहिये । यथा-- वर्गशलाकाओंकेदो त्रिभागोंका विरलन करके गुणहानिको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति अपवर्तन रुपोंका प्रमाण प्राप्त होता है । >

< अब यहां एक अधिक प्रक्षेप रुपोंका अपनयन करनेपर भागहारकी वृद्धि की जाती है । वह इस प्रकार है- एक अधिक उन्हीं प्रक्षेप रुपोंसे एक रुपधरित राशिको अपवर्तित करके नीचे विरलित कर उपरिम एक रुपधरित राशिको समखण्ड करके देनेपर एक अधिक प्रक्षेप रुप प्राप्त होते हैं । पुनः इस प्रमाणसे ऊपरकी सब रुपोंपर रखी हुई राशियोंमेंसे कम करनेपर अपनयनसे

शेष रहा लब्धका प्रमाण होता है । फिर कम किये गये द्रव्यको शेषके प्रमाणसे करनेपर एक कम अधस्तन विरलन मात्र उनके यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंमें कितनी प्रक्षेपशलाकायें प्राप्त होगी, इस प्रकार रूपसे कम करते समय छेद मात्रको कम करना चाहिये । इस प्रकार कम करनेपर नीचे व ऊपर एक अधिक प्रक्षेप रूप व लब्ध होता है । इसका भाग देनेपर अधस्तन छेद वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंका गुणकार होता है । इस प्रकारसे गुणित करनेपर यहां क्या उत्पन्न होता है, यह ज्ञात नहीं होता । इसलिये वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंके ऊपर >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

‘बेत्तिभागाणं उवरि पुव्विल्लकिंणूणध्दरुवं पक्खित्ते भागहारो होदि । एवं पक्खित्ते रुवा-हिय पक्खेवरुवेहि गुणिदकिंणूणध्दरुवं पविसदि (ताप्रतिपाटोऽयम । अ काप्रत्योः ‘परिसदि’ इति पाठः ।) । तं ताव पविट्ठअभावदव्वं पच्छा अवणेदव्वं । रुवाहियपक्खेवरुवेसु रुवं अवणिदे भागहारमेत्तं ओसरदि । सेसपक्खेव-रुवेहि भागहारं गुणिदे लध्दस्सदं होदि । हेट्ठिमछेदभूदलध्दं विरलिय लध्दस्सध्दं सम-खंडं कादूण दिण्णे अध्दध्दरुवं पावदि । पुणो अवणिदभागहारमेत्तरुवाणि वि समखंडं कादूण दिण्णे लध्देण भागहारुं खंडेदूण एगेगं खंडं पावदि । पुणो अध्दरुवेण सह सरि-सछेदं कादूण मेलाविदे हेट्ठा उवरिं च दुगुणलध्दं दुगुणभागहारेणाहियलध्दं च होदूण रुवं पडि चेट्ठदि । पुणो एदेसु सव्वरुवधरिदेसु पुव्वपविट्ठअभावदव्वं केत्तियमिदि भणिदे हेट्ठा दुगुणोवट्ठणरुवाणि उवरि रुवाहियपक्खेवरुवाणि दुगुणभागहारेणभहियलध्दं च गुणगार-गुणिज्जमाणसरुवेण ट्ठिदं एदं सव्वरुवधरिदेसु अवणिज्जमाणं होदि । एदं (अप्रतौ ‘एवं’इति पाठः ।) चैव लध्देण खंडिदे एगेगरुवधरिदस्सुवरि अवणिज्जमाणं होदि । पुणो एगेगरुव-धरिदं सरिसछेदं कीरमाणे ओवट्ठणरुवेहि हेट्ठुवरि गुणिय रुवाहियपक्खेवाणि अवणिदे पविट्ठअभावदव्वं फिट्ठदि । अवणिदसेसं पि ओवट्ठिज्जमाणे हेट्ठिम-उवरिम-उवरिमलध्दाणि अवणिदे सेसं अध्दरुवं ओवट्ठणरुवेहि खंडिय दुगुणियभाग-

< पूर्वोक्त कुछ कम अर्ध रूपका प्रक्षेप करनेपर भागहार होता । इस प्रकारसे प्रक्षेप करनेपर एक अधिक प्रक्षेप रूपोंसे गुणित कुछ कम अर्ध रूप प्रविष्ट होता है । उस प्रविष्ट अभाव द्रव्यको पीछे

कम करना चाहिये । एक अधिक प्रक्षेप रूपोंमेंसे एक अंकको कम करनेपर भागहार मात्र कम होता है । शेष प्रक्षेप रूपोंसे भागहारको गुणित करनेपर लब्धका आधा होता है । अधस्तन छेदभूत लब्धका विरलन करके लब्धके अर्ध भागको समखण्ड करके देनेपर अर्ध अर्ध रूप प्राप्त होता है । पश्चात् कम किये गये भागहार प्रमाण रूपोंको भी समखण्ड करके देनेपर लब्धसे भागहारको खण्डित कर एक एक खण्ड प्राप्त होता है । फिर अर्ध रूपके साथ समच्छेद करके मिलानेपर नीचे व ऊपर दुगुणा लब्ध और दुगुणे भागहारसे अधिक लब्ध होकर रूपके प्रति स्थित होता है । अब इन समस्त रूपधरित राशियोंमें पूर्व प्रविष्ट अभाव द्रव्य कितना है, ऐसा पूछे जानेपर उत्तर देते हैं कि नीचे दुगुणे अपवर्तन रूप, ऊपर एक अधिक प्रक्षेप रूप और गुणकार व गुण्य स्वरूपसे स्थित एवं दुगुणे भागहारसे अधिक लब्ध; यह सब रूपधरितोंमें अपनीयमान द्रव्य है । इसको ही लब्धसे खण्डित करनेपर एक एक रूपधरित राशिके ऊपर अपनीयमान द्रव्य होता है । पुनः एक एक रूपधरितको समच्छेद करते समय अपवर्तन रूपोंसे नीचे व ऊपर गुणित करके एक अधिक प्रक्षेपोंको कम करनेपर प्रविष्ट अभाव द्रव्य फिट जाता है । कम करनेसे शेष रहे द्रव्यका भी अपवर्तन करते समय अधस्तन व उपरिम-उपरिम लब्धोंको >

वेयणामहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

‘हारेणब्भहियलध्दमेत्तखंडाणि (प्रतिषु ‘अध्दमेत्तखंडाणि’ इति पाठः।) रुवं पडि पावेंति । एदं वग्गसलागबेत्तिभागाणमुवरि पक्खित्ते भागहारो होदि । कम्मड्ढिदिभागहारो केत्तियमध्दधाणं चडिदूण बद्धदव्वस्स भागहारो होदि त्ति वुत्ते कम्मड्ढिदिपलिदोवमसलागाहि पलिदोवमवग्गसलागाणं बेत्तिभागे गुणिय गुणहाणिमोवट्टिय लद्धम्मि पक्खेवरुवेसु अवणिदे चडिदध्दधाणं होदि । तदवणयणट्ठं भागहारम्मि किंन्नुणेगरुवध्दपक्खेवो पुव्वं व कायव्वो ।

‘संपधि पढमरुवुप्पण्णध्दधाणं किं बहुअं, जम्मि अध्दधाणे पलिदोवमं भागहारो जादो किं तमध्दधाणं बहुगमिदि उत्ते उच्चदे- रुवुप्पण्णध्दधाणादो असंखेज्जपलिदो- वमबिदियवग्गमूलपमाणादो पलिदोवमभागहारध्दधाणमसंखेज्जगुण, असंखेज्जपलिदो- वमपढमवग्गमूलपमाणात्तादो । गाणावरणादीणं पुण पलिदोवमभागहरध्दधाणादो (ताप्रतौ ‘भागहारध्दधाणि दो-’ इति पाठः।) रुवुप्पण्णध्दधाणमसंखेज्जगुणं, असंखेज्जबिदियवग्गमूलत्तणेण दोण्णमध्दधाणाणं भेदाभावे वि

सांतर-णिरंतरवग्गुणगारेण कयभेदत्तादो । एदेण कमेण गुणहाणीए अण- वड्ढिभागहारो जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तो जादो । ताधे पक्खेवरुवाणं किंपमाणं ?

< अलग करनेपर शेष अर्ध रूपको अपवर्तन रूपोंसे खण्डित करकेदुगुणे भागहारसे अधिक लब्ध मात्र खण्ड प्रत्येक अंकके प्रति प्राप्त होते हैं । इसका वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंके ऊपर प्रक्षेप करनेपर भागहार होता है । कर्मस्थितिका भागहार कितना अध्वान जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार होता है, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि कर्मस्थितिकी पल्योपमशलाकाओंसे पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंको गुणित करके गुणहानिको अपवर्तित कर लब्धमेंसे प्रक्षेप रूपोंको कम कर देनेपर आगेका विवक्षित अध्वान होता है । उसको अलग करनेके लिये भागहारमें कुछ कम एक रूपके अर्धभागका प्रक्षेप पहिलेकेही समान करना चाहिये । >

< अब प्रथम रूपोत्पन्न अध्वान बहुत है, अथवा जिस अध्वानमें पल्योपम भागहार होता है वह अध्वान क्या बहुत है ? ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं- असंख्यात पल्योपम द्वितीय वर्गमूलके बराबर रूपोत्पन्न अध्वानकी अपेक्षा पल्योपम भागहारका अध्वान असंख्यातगुणा है, क्योंकि, वह असंख्यात पल्योपमोंके प्रथम वर्गमूलके बराबर है । परन्तु ज्ञानावरणादिकोंका रूपोत्पन्न अध्वान पल्योपमभागहारके अध्वानसे असंख्यातगुणा है, क्योंकि, असंख्यात द्वितीय वर्गमूल स्वरूपसे दोनों अध्वानोंमें कोई भेद न होनेपर भी सान्तर-निरन्तर वर्गस्थानोंके गुणकारसे उनमें भेद किया गया है । इस क्रमसे गुणहानिका अनवस्थित भागहार जघन्य परीतासंख्यातके बराबर हो जाता है । >

< शंका- तब प्रक्षेप रूपोंका प्रमाण कितना होता है ? >

< समाधान- जघन्य परीतासंख्यातके वर्गको दूना करके उसका गुणहानिअध्वानमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र प्रक्षेप रूप होते हैं । >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

दुगुणेण जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गेण गुणहाणिअध्दाने भागे हिदे भागलध्दमेत्ताणि पक्खेवरुवाणि होंति । अणवड्ढिभागहारे चदुरुवपमाणे जादे पक्खेवरुवाणं किं पमाणं ? गुणहाणिअध्दानस्स बत्तीसदिमभागो पक्खेवरुवाणि । अणवड्ढिभागहारे दोरुवमेत्ते जादे पक्खेवरुवाणं पमाणं गुणहाणीए अट्ठमभागो । अणवड्ढिभागहारे एगरुवमेत्ते जादे पक्खेवरुवाणि गुणहाणिदुभागमेत्ताणि

होंति । एदाणि चदिडध्दाणम्मि पक्खित्ते दिवङ्क-गुणहाणीओ होंति । एदाहि चरिमणिसेगभागहारे ओवट्टिदे रूवूणण्णोण्णभत्थरासी तदित्थसंचयस्स भागहारो होदि ।

‘संपधि समयाहियगुणहाणिमुवरि चट्ठिदूण बध्दसमयपबध्दसंचयस्स किंचूणण्णोण्ण- (प्रतिषु ‘किंचूणरूवूणण्णोण्ण’ इति पाठः।) भत्थरासी भागहारो होदि । तं जहा- (प्रतिष्वतः प्राक् ‘णाणावरणीयं विरलिय विर्गकरिय’ इत्यधिकः पाठः प्राप्यते ।) अण्णोण्णभत्थरासिं रूवूणं विरलेदूण सम-यपबध्ददव्वं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स चरिमगुणहाणिदव्वं पावदि । पुणो दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण ।१८। चरिमगुणहाणिदव्वे भागे हिदे भागलध्दमेदं

५०

९

। (प्रतिषु ५० इति पाठः।) पुव्वविरलणाए हेट्ठा विरलेदूण उवरिमएगरुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे विर-लणरूवं पडि दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो पावेदि । एत्थ एगरुवधरिदं घेत्तूण उवरिमविरलणाए एगरुवधरिदचरिमगुणहाणिदव्वम्मि ठविदे इच्छिददव्वपमाणं

< शंका-- अनवस्थित भागहारके चार अंक प्रमाण होनेपर प्रक्षेप रूपोंका प्रमाण कितना होता है ? >

< समाधान- उक्त प्रक्षेप रूप उस समय गुणहानिअध्वानकेबत्तीसवें भाग मात्र होते हैं । >

< अनवस्थित भागहारके दो अंक प्रमाण होनेपर प्रक्षेप रूपोंका प्रमाण गुणहानिके आठवें भाग मात्र होता है । अनवस्थित भागहारका प्रमाण एक अंक मात्र होनेपर प्रक्षेप अंक गुणहानिके द्वितीय भाग प्रमाण होते हैं । इनको आगेके विवक्षित अध्वानमें मिला-नेपर डेढ गुणहानियां होती है । इनकेद्वारा चरम निषेकभागहारको अपवर्तित करनेपर एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशि वहांके संचयका भागहार होता है । >

< अब एक समय अधिक गुणहानि प्रमाणस्थान आगे जाकर बांधे गये समय-प्रबध्दके संचयका भागहार कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि होती है । यथा- रूप कम अन्योन्याभ्यस्त राशिका विरलन करके समयप्रबध्दके द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति अन्तिम गुणहानिका द्रव्य प्राप्त होता है । पश्चात् द्विचरम गुणहानिके चरम निषेकका चरम गुणहानिके द्रव्यमें भाग देनेपर ल७ ५ ५/९ इसका पूर्व विरलनके नीचे विरलन करके उपरिम विरलनके एक

अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति द्विचरम गुणहानिका चरम निषेक प्राप्त होता है । यहां एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहण करके उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त चरम गुणहानिके द्रव्यमें स्थापित करनेपर इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता >

वेयणामहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्त

‘ठविदे इच्छिददव्वपमाणं होदि । एवं बिदियं तदिये, तदियं चउत्थं, चउत्थे पंचमे पक्खिविय णेदव्वं जाव हेट्टिमविरलणसव्वरुवधरिदं उवरिमविरलणचरिमगुणहाणि- दव्वेसु पविट्ठं ति । एत्थ एगरुवपरिहाणी लब्भदि । पुणो तदणंतरएगरुवधरिदं हेट्टिमविरलणाए समखंडं करिय दादूण (मुद्रितप्रतौ ‘दिण्णे’ इति पाठः ।) तदणंतरुवधरिदप्पहुडि पुव्वं व पक्खित्ते (प्रतिषु ‘पुव्वपक्खित्ते’ इति पाठः ।) एत्थ बिदियरुवपरिहाणी लब्भदि । एवं उवरिमविरलणसव्वदव्वस्स समकरणे कदे परिहीणरुवाणमाणयणविहाणं वुच्चदे । तं जहा- रुवाहियहेट्टिमविरलणमेत्तध्दाणं गंतूण जदि एगरुवपरिहाणी लब्भदि तो रुवूणणोण्णभत्थरासिमेत्तुवरिमविरलणाए किंलभामो ति

५०	१	६३
९		

पमाणेण फलगुणिदिच्छामोवट्टिय लद्धं उवरिमविरल-णम्मि सोहिदे सेसमिच्छिदभागहारो होदि । तस्स संदिट्ठी ।

३१५
०
५९

‘संपधि मोहणीयस्स एत्थ अवणिदरुवाणि असंखेज्जाणि हवंति, गुणहाणित्तिण्णि- चदुब्भागेण रुवाहिएण रुवूणणोण्णभत्थरासिम्मि ओवट्टिदे असंखेज्जरुवागमणदंस-णादो । सेसकम्माणं पुण अवणिदपमाणमेगरुवस्स असंखेज्जदिभागो, भागहारभूद-

< है । इस प्रकार द्वितीयको तृतीयमें, तृतीयको चतुर्थमें, चतुर्थको पंचममें मिलाकर अधस्तन विरलन सम्बन्धी सब अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यके उपरिम विरलन सम्बन्धी चरम गुणहानिके द्रव्योंमें

प्रविष्ट होने तक ले जाना चाहिये । यहां एक अंककी हानि पायी जाती है । फिर तदनंतर एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको अधस्तन विरलनके ऊपर समखण्ड करके देकर इसे उपरिम विरलनमें तदनन्तर अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यसे लेकर पहिलेके समान मिलानेपर यहा द्वितीय अंककी हानि पायी जाती है । इस प्रकार उपरिम विरलन राशि सम्बन्धी सब द्रव्यका समीकरण करनेपर कम हुए अंकोंके लानेका विधान कहते हैं । यथा-- एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशि मात्र उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि होगी, इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिको प्रमाण राशिसे अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उसे उपरिम विरलनमेंसे कम कर देनेपर शेष रहा इच्छित भागहार होता है । उसकी संदृष्टि- >

< उदाहरण- यदि $50/9 + 9$ पर एक अंककी हानि होती है तो 63 पर कितने अंकोंकी हानि होगी- 63×9 ($50/9 = 560/9$; $63 = 3090/49$; $3090/49 - 560/49 = 3950/49$ इच्छित भागहार । >

< अब यहां मोहनीय कर्मके हीन हुए अंक असंख्यात हैं, क्योंकि, गुणहानिके एक अधिक तीन चतुर्थ भागका एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर असं-ख्यात रूपोंका आगमन देखा जाता है । परन्तु शेष कर्मोंके कम हुए अंकोंका प्रमाण एक रूपके असंख्यातवें भाग मात्र होता है, क्योंकि, भागहारभूत गुणहानिकेतीन चतुर्थ >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

‘गुणहाणितिणिचदुब्भागं पेक्खिदूण उवरिमविरलणअण्णोण्णत्थरासीए असंखेज्ज-गुणहीणत्तादो

।

३९५

०

५९

एदेण समयपबध्दे भागे हिदे दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण सह चरिमगुणहाणिदव्वमागच्छदि

।११८।।

‘पुणो कम्मद्धिदिआदिसमयप्पहुडि दुसमयाहियगुणहाणिमेत्तद्धाणमुवरि चड्ढिदूण बध्द-
संचयस्स भागहारो वुच्चदे । तं जहा- धुवरासिदुभागं

२५

९

विरलेदूण उवरिमपढम-रुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि दोदो गोवु च्छओ पावेंति । पुणो
एत्थ दोगोवुच्छविसेसागमणट्ठं बिदियविरलणाए हेड्डा रुवाहियगुणहाणिं दुगुणं विर-लिय
बिदियविरलणाए एगरुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स दोदो गोवुच्छविसेसा
पावेंति । पुणो एत्थ एगेगरुवधरिदं घेतूण मज्झिमविरलणाए बिदिय-रुवधरिदप्पहुडि दादूण
समकरणे कीरमाणे मज्झिमविरलणाए परिहीणरुवाणं पमाणं वुच्चदे । तं जहा-
दुगुणरुवाहियगुणहाणिं सरुवं गंतूण जदि एगरुवपरिहाणी (अ-काप्रत्यो: ‘परिहीणी’, ताप्रतौ
‘परिहीणं’ इति पाठः ।) लब्धदि तो मज्झिमविरलणद्धाणम्मि केत्तियाणि परिहाणिरुवाणि लभामो त्ति

१	१	२५
९		९

पमाणेण फलगुणिदिच्छामोवट्ठिय लद्धं मज्झिमविरलणाए अवणिदे इच्छिदभाग-

< भागकी अपेक्षा उपरिम विरलन रूप अन्योन्याभ्यस्त राशि असंख्यातगुणी हीन है । ३१५०/५९
इसका समयप्रबध्दमें भाग देनेपर द्विचरम गुणहानि सम्बन्धी चरम निषेकके साथ चरम गुण-
हानिका द्रव्य आता है ६३०० (३१५०/५९ = ११८ । >

< अब कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर दो समय अधिक गुणहानि मात्र स्थान आगे
जाकर बांधे हुए द्रव्यके संचयका भागहार कहते हैं । यथा- ध्रुव राशिके द्वितीय भाग (२५/९) का
विरलन करके उपरिम विरलनके प्रथम अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर अधस्तन
विरलनके प्रत्येक एकके प्रति दो दो गोपुच्छ प्राप्त होते हैं । फिर यहां दो गोपु-च्छविशेषोंके लानेके
लिये द्वितीय विरलनके नीचे एक अधिक गुणहानिके दूनेका विरलन करके द्वितीय विरलनके नीचे
एक अधिक गुणहानिके दूनेका विरलन करके द्वितीय विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको
समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति दो दो गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं । फिर यहां एक
एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यमें देकर समीकरण करनेपर मध्यम विरलनमें कम हुए अंकोंका प्रमाण

कहते हैं । यथा- एक अधिक गुणहानिके दुगुणे प्रमाणमें एक अंक और मिलानेपर जो $[(\text{८}+\text{१}) \times \text{२} + \text{१} = \text{१९}]$ प्राप्त हो उतने स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो मध्यम विरलनके अध्वानमें कितने हीन अंक प्राप्त होंगे, इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिको प्रमाण राशिसे अपवर्तित कर लब्धको मध्यम विरलनमेंसे कम कर देनेपर इच्छित भागहार होता है

$$\frac{२५}{९} \times १ (१९ = \frac{२५}{१७१}, \frac{२५}{९}, = \frac{४७५}{७६}, \frac{४७५}{१७१} - \frac{२५}{१७१} = \frac{४५०}{१७१} = \frac{५०}{१९}$$

| >

वेयणामहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

गुणहाणितिण्णि

५०
१९

। एदमध्दाणं रुवाहियं गंतूण जदि एगरुवपरिहाणी लब्धदि तो उवरिमविर- लणम्मि किं लभामो त्ति

६९	१	६
१९		३

पमाणेण फल-गुणिदमिच्छामोवट्टिय लध्दमुवरिमविरलणम्मि सो-

हिदे पयदसंचयस्स भाग- हारो होदि

३१५
०
६९

। एदेण समयपबध्दे भागे हिदे दुचरिमगुणहाणिचरिम-दुचरि-मणिसेगेहि सह चरिमगुणहाणिदव्वभागच्छदि ।१३८।। एवमुवरि जाणि-दूण तीहि विरलणाहि भागहारो साधेदव्वो । णवरि तिसमयाहियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बध्दसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी

३१५
८

। चदुसमयाहियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बध्दसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी ।

१५७

५

४६

पंचसमयाहियगुणहा-णिमुवरि चडिदूण बध्दसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी

६३०

२१

। छसमया-हियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बध्दसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी

३१५

०

११९

।

१५७

६७

एवं गंतूण कम्मड्विदिपढमसमयादो दोगुणहाणिमेत्तध्दाणं चडिदूण बध्ददव्व-भागहारो (रुवूण-)
अण्णोण्णभत्थरासिस्स तिभागो होदि ।२१।। दोगुणहाणीओ

< एक अधिक यह स्थान जाकर यदि एक अककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाका अप-वर्तन कर लब्धको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर प्रकृत संचयका भागहार होता है- $६३ \times १ (६०/१९ = ११०७/६९; ६३ = ४३४७/६९, ४३४७/६९ - ११०७/६९ = ३१५०/६९$ । इसका समयप्रबध्दमें भाग देनेपर द्विचरम गुणहानिके चरम और द्विचरम निषेकोंके साथ चरम गुणहानिका द्रव्य आता हैं- $६३०० (३१५०/६९ = १३८ = (१०० + १८ + २०)$ । इस प्रकार आगे जानकर तीन विरलनोंसे भागहारको सिध्द करना चाहिये । विशेषता केवल इतनी है कि तीन समय अधिक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि $३१५/८$ है । चार समय अधिक एक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि $१५७५/४६$ है । पांच समय अधिक एक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर

बांधे गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि ६७०/२१ है । छह समय अधिक एक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि ३१५०/११९ हैं । सात समय अधिक एक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधें गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि १५७५/६७ है । इस प्रकार जाकर कर्म--स्थितिके प्रथम समयसे लेकर दो गुणहानि मात्र स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचयका भागहार (एक कम) अन्योन्याभ्यस्त राशिके तृतीय भाग मात्र होता है $६४-१/३ = २१$ । चूंकि दो गुणहानियां चढा है, अतः दो अंकोंका विरलन कर दुगुणा >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

‘चडिदो ति दोरुवाणि विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थं करिय रुवमवणिदे तिण्णि रुवाणि लब्भंति, तेहि रुवूण्णोण्णभत्थरासिम्मि ओवट्टिदे तस्स तिभागो-वलंभादो । एदेण समयपबध्दे भागे हिदे पढम-बिदियगुणहाणीयो चडिऊण बध्द-(प्रतिषु ‘लध्द’ इति पाठः।) दव्वसंचओ आगच्छदि ।३००।।

‘संपहि समयाहियदोगुण (अ-काप्रत्योः ‘समयाहियाहिदो’ इति पाठः।) हाणीयो चडिऊण बंधमाणस्स रुवूण्णोण्णभत्थ-रासितिभागो किंचूणो भागहारो होदि । तं जहा-रुवूण्णोण्णभत्थरासितिभागं विरलेदूण समयपबध्दं समखंडं करिय दिण्णे चरिम (दुचरिम) गुणहाणिदव्वं पावदि । पुणो तदणंतरतिचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण सह आगमणमिच्छय ।३६। एदेण चरिम-दुचरिम-गुणहाणिदव्वे भागे हिदे धुदरासी आगच्छदि

२५

३

। एदं विरलेदूण उवरिमविरलणेगरुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे तिच- रिमगु-णहाणिचरिमणिसेगो पावदि । तं बिदियरुवधरिदप्पहुडि दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरुवाणं पमाणं वुच्चदे - रुवाहियहेट्टिमविरलणमेत्तध्दाणं गंतूण जदि (अ-काप्रत्योः ‘वड्ढी’ इति पाठः।) एगरुवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं

< करके और परस्पर गुणा करके उसमेंसे एक अंकको कम करनेपर तीन अंक प्राप्त होते हैं, क्योंकि, उनका एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर उसका तृतीय भाग आता है- [(६४-१) (२ X २ - १) = २१)] । इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर प्रथम व द्वितीय गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका संचय आता है- ६३०० (२१ = ३०० । >

< अब एक समय अधिक दो गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधे जानेवाले द्रव्यका भागहार एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके तृतीय भागसे कुछ कम होता है । वह इस प्रकारसे - एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके तृतीय भागका विरलन करके समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर अन्तिम (व द्विचरम) गुणहानिका द्रव्य प्राप्त होता है (६४-१/३ = २१, ६३०० (२१ = ३०० चरम और द्विचरम गुणहानियोंका द्रव्य) । पुनः चूंकि तदनन्तर त्रिचरम गुणहानिके चरम निषेकके साथ लाना अभीष्ट है, अतः इस (३६) का चरम और द्विचरम गुणहानियोंके द्रव्यमें भाग देनेपर ध्रुवराशि आती है- ३०० (३६ = २५/३ । इसका विरलन करके उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर त्रिचरम गुणहानिका चरम निषेक) । फिर उसे (उपरिम विरलनके) द्वितीय आदि अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यमें देकर समीकरण करनेपर हीन हुए अंकोंका प्रमाण बतलाते हैं - एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो ऊपरकी विरलन राशिमें कितने अंकोंकी >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे चूलिया

‘लभामो ति

२८	१	२१
३		

पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिय लद्धे उवरिमवि-रलणाए सोहिदे पयदसंचयभागहारो होदि

७५
४

। एदेण समयपबद्धे भागे हिदे पयददव्वमागच्छदि ।३३६।।

‘पुणो दुसमयाहियदोगुणहाणीओ चडिय बद्धदव्वभागहारे आणिज्जमाणे ध्रुव-रासिदुभागं विरलिय उवरिमविरलणेगरुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे दो-द्वोचरिम णिसेया

होदूणेगेगरुवस्सुवरि पावेंति । एत्थेगचरिमणिसेगस्सुवरि एगविसेसमिच्छामो ति विदियविरलणाए हेद्वा रुवाहियगुणहाणिं दुगुणं विरलेदूण एगरुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे एगेगगोवुच्छविसेसो पावदि । एत्थ वि पुव्वं व समकरणे कीरमाणे जाणि णिराधाररुवाणि तेसिमाणयणं वुच्चदे - रुवाहियगुणहाणिं दुगुण-रुवाहियं गंतूण-जदि एगरुवपरिहाणी लब्भदि तो मज्झिमविरलणाए किं लभामो ति

१९	१	२५
		६

पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिदे परिहाणिरुवाणि लब्भंति । पुणो तेसु मज्झिमविरलणाए अवणिदेसु भागहारो होदि ७५ ।

१९

पुणो रुवाहियमज्झिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरुवावणयणं लब्भदि

< हानि पायी जायेगी, इस प्रकार प्रमाण राशिका फलगुणित इच्छा राशिमैं भाग देनेपर जो लब्ध हो उसे ऊपरकी विरलन राशिमैंसे कम कर देनेपर प्रकृत संचयका भागहार होता है-- । 29×9 ($28/3 = 9/8$; $29 = 28/8$; $28/8 - 9/8 = 19/8$ । इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर प्रकृत द्रव्य आता है-- $6300 (19/8 = 336) >$

< पुनः दो समय अधिक दो गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार निकालनेमें ध्रुव राशिके द्वितीय भागका विरलन करके उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके ऊपर दो दो अन्तिम निषेक होकर प्राप्त होते हैं ($300 (25/6 = 72 = 36 \times 2$) । यहां चूंकि एक अन्तिम निषेकके ऊपर एक विशेषकी इच्छा है, अतः द्वितीय विरलन राशिके नीचे एक अधिक दूनी गुणहानिका [($1+9$) = $9 \times 2 = 18$] विरलन करके एक अंकके प्रति प्राप्त प्रमाणको समखण्ड करके देनेपर एक एक गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है ($72 (18 = 4$) । यहांपर भी पहलेके ही समान समीकरण करनेपर जो निराधार अंक हैं उनके लानेकी प्रक्रिया बतलाते हैं- एक अधिक गुणहानिको दुगुणा करके उसमें एक अंक और मिलानेपर जो प्राप्त हो उतने ($1+9 \times 2 + 9 = 27$) स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी

जाती है तो मध्यम विरलन राशिमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छा राशिको प्रमाण राशिमेंसे अपवर्तित करनेपर हानि प्राप्त अंक पाये जाते हैं । उनको मध्यम विरलन राशिमेंसे कम कर देनेपर भागहारका प्रमाण होता है-- $25/6 \times 9 (99 = 25/998;$ $25/6 - 25/998 = 95/99$ । फिर एक अधिक मध्यम विरलन राशि प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फल राशिसे >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

‘तो उवरिमविरलणाए किंलभामो ति

९४	१	२१
१९		

प्रमाणेण फलगुणितमिच्छ-मोवट्टिय लध्दे उवरिमविरलणाए सोहिदे पयददव्वभागहारो होदि

१५७
५
९४

। एदेण समयपबध्दे भागे हिदे इच्छिददव्वमागच्छदि ।३७६।।

‘पुणो तिसमयाहियदोगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बध्ददव्वभागहारो

१०५
७

चदुसमयाहियदोगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बध्ददव्वभागहारो

५२
५
३९

पंचसमयाहियदोगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बध्ददव्वभागहारो ३१५ छसमयाहियदोगुणहाणीओ उवरि चडिदूण

२६

बध्ददव्वभागहारो सत्तसमयाहियदोगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बध्ददव्व-

५२

५

४८

(अ-कप्रत्योः 'वृद्ध्वो' इति पाठः ।) भागहारो

५२

५

५३

। एवमङ्ग-णव-दसादिसमयाहियदोगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्ध-दव्वभागहारो वत्तव्वो
(मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु

५२

५

५२

इति पाठः ।)।

'तिणिणगुणहाणीओ चडिदूण बद्धदव्वभागहारे भण्णमाणे

३

४

एदं रुवाहिय-मद्धाणं गंतूण जदि एगरुवपरिहाणी लब्भदि तो रुवूणणोण्ण-
ब्भत्थरासिति-भागम्मि किंलभामो ति

७

१

२

४

१

पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिय लद्धं उवरिमविरलणाए सोहिदे इच्छिददव्वभागहारो होदि ।

अधवा,

< गुणित इच्छा राशिको प्रमाण राशिसे अपवर्तित करके लब्धको उपरिम विरलन राशिमेंसे कम
कर देनेपर प्रकृत द्रव्यका भागहार होता है- $74/99 + 99/99 = 98/99$; $29 \times 9 (98/99 =$

३९९/९४; २१ = १९७४/९४; १९७४/९४ - ३९९/९४ = १५७५/९४ । इसका समयप्रबद्धमें भाग देने-
पर इच्छित द्रव्य आता है-- ६३०० (१५७५/९४ = ३७६ । >

< पुनः तीन समय अधिक दो गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार १०५/७;
चार समय दो गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार ५२५/३९; पांच समय अधिक दो
गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार ३१५/२६; छह समय अधिक दो गुणहानियां
आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार ५२५/४८; और सात समय अधिक दो गुणहानियां आगे
जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार ५२५/५३ है । इसी प्रकार आठ, नौ और दस आदि समयोंसे
अधिक दो गुणहानिका आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके भागहारकी प्ररुपणा करना चाहिये । >

< तीन गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यके भागहारकी प्ररुपणामें एक अधिक इतना
(३/४) स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके
तृतीय भागमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके
लब्धको उपरिम विरलन राशिमेंसे घटा देनेपर इच्छित द्रव्यका भागहार होता है-- २१×१ (७/४ =
१२; २१-१२ = ९ । अथवा, कर्म-स्थितिके प्रथम समयसे लेकर तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे
गये द्रव्यका भागहार चूंकि अभीष्ट है, अत एव तीन गुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणा
कर परस्पर >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

कम्मद्विदिआदिसमयप्पहुडि तिण्णिगुणहाणीओ चडिय बद्धदव्वभागहारमिच्छामो ति
तिण्णिगुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णो-ण्णब्भत्थरासिणा रुवूणेण
रुवूणण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि ओवद्धिदे पयददव्वभागहारो होदि

९

। एदेण सब्बदव्वे भागे हिदे कम्मद्विदिपढमसमयप्पहुडि तिण्णिगुणहाणीओ चडिदूण
बद्धसमयपबद्ध मुक्कट्टिय धरिददव्वं होदि ।

७०

०

संपधि समयाहियतिणिगुणहाणीओ चडिय बध्ददव्वसंचयभागहारो रुवूणण्णो-
ण्णभ्भत्थरासीए सत्तमभागो किंचूणो । तं जहा - रुवूणण्णोण्णभ्भत्थरासिसत्तम- भागं विरलेदूण
समयपबध्दं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि तिणिगुणहाणिदव्वं पावेदि । पुणो एत्थ
चदुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण सह आगमणमिच्छिय

७

२

। एदेण उवरिमएगरुवधरिदे

७०

०

। भागे हिदे धुवरासी होदि

१७

५

१८

। एदं विर-लिय उवरिमविरलणेगरुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि (चदु-)
चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो पावेदि । पुणो तमुवरिमरुवधरिदेसु दादूण समकरणे कीरमाणे जाणि
परिहीणरुवाणि तेसिं पमाणपरुवणा कीरदे । तं जहा- हेट्टिमविरलणं रुवाहियं गंतूण जदि
एगरुवपरिहाणी लब्भदि तो रुवूणण्णोण्णभ्भत्थ-रासिसत्तभागम्मि किंलभामो त्ति

१९

१

९

३

१८

पमाणेण फलगुणिद-मिच्छामोवट्टिय लध्दे उवरिमविरलणम्मि सोहिदे पयददव्वभागहारो

< गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसमें एक कम करके शेषका एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर प्रकृत द्रव्यका भागहार होता है-- $2 \times 2 \times 2 = 8$; $8 - 9 = 7$; $68 - 9 = 63$; $63 (7 = 9)$ ।

9 9 9

इसका समस्त द्रव्यमें भाग देनेपर कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर तीन गुणहानियां जाकर बांधे गये समयप्रबद्धका निर्जीर्ण होकर शेष रहा द्रव्य होता है-- $6300 (9 = 700)$ । >

< अब एक समय अधिक तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचयका भागहार एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागसे कुछ कम होता है । वह इस प्रकारसे-- एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति तीन गुणहानियोंका द्रव्य प्राप्त होता है । परन्तु चूंकि यहां चतुश्चरम गुणहानिके चरम निषेकके साथ लाना अभीष्ट है, अत एव इस (72) का उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिमें भाग देनेपर ध्रुवराशि होती है-- $700 (72 = 975/96)$ । इसका विरलन करके उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको सम-खण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति (चतुः) चरम गुणहानिका चरम निषेक प्राप्त होता है । उसे उपरिम अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंमें देकर समीकरण करनेपर जो हीन अंक हैं उनके प्रमाणकी प्ररुपणा करते हैं । वह इस प्रकार है-- एक अधिक अधस्तन विरलन जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको उपरिम विरलन राशिमेंसे कम कर देनेपर प्रकृत द्रव्यका भागहार होता है-- >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

होदि

१५७

५

१९३

(अ-काप्रत्योः)

१५७
५
१६२

ताप्रतौ

१५७
५
१९२

इति पाठः ।।) एदेण समयपबद्धे भागे हिदे अप्पिददव्वमागच्छदि ।

७७
२

पुणो दुसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चढिय बध्ददव्वभागहारो उच्चदे । तं जहा-
धुवरासिदुभागं विरलिय एगरुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि दो-दोचरिमणिसेगा पावेति ।
पुणो एत्थ एगविसेसेण अहियमिच्छिय एदिस्से विरलणाए हेट्ठा रुवाहियगुणहाणिं दुगुणं विरलिय
मज्झिमविरलणेगरुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे एगेगविसेसो पावेदि । तमुवरिमेगेगरुवधरिदेसु
दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरुवाणयणविहाणं वुच्चदे । तं जहा- हेट्ठिमविरलणं रुवाहियं
गंतूण जदि एगरुवपरिहाणी लब्भदि तो मज्झिमविरलणम्मि किं लभामो ति

१९	१	१७५
		३६

(काप्रतौ १६९

इति पाठः ।।) पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्ठिय मज्झिमविरलणाए लध्दे अवणिदे एत्तियं होदि

१७५
३८

। पुणो एदं रुवाहियं गंतूण जदि एगरुवपरिहाणि लब्भदि तो रुवूणणोण्णभत्थरासिसत्तभागम्मि
किं

< ६४-१/७ = ९; ९X१ (१९३/१८ = १६२/१९३; ९ = १७३७/१९३; १७३७/१२३ - १६२/१९३ = १५७५/१९३ ।

इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर विवक्षित द्रव्य आता है-- ६३०० (१५७५/१९३ = ७७२ । >

< पुनः दो समय अधिक तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कहते हैं । वह इस प्रकार है-- ध्रुवराशिके द्वितीय भागका विरलन करके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति दो दो अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं (७०० (१७५/३६ = १४४) । चूंकि यहाँ एक विशेषसे अधिककी इच्छा है, अतः इस विरलनराशिके नीचे एक अधिक गुणहानिके दूनेका विरलन करके मध्यम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक विशेष प्राप्त होता है (८ + १X२ = १८; १४४ (१८ = ८) । उसको उपरिम एक एक अंकके प्रति प्राप्त राशिमें देकर समीकरण करनेपर हीन अंकोंके लानेकी विधि बतलाते हैं । वह इस प्रकार है-- एक अधिक अधस्तन विरलन जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो मध्यम विरलन राशिमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको मध्यम विरलन राशिमेंसे घटा देनेपर इतना होता है- १७५/३६ X १ (१९ = १७५/६८४; १७५/३६ - १७५/६८४ = ३१५०/६८४ = १७५/३८ । पुनः इससे एक अधिक जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागमें वह कितनी >

वेयणमहाहियारे वेयणादव्वविहाणे सामित्तं

लब्भदि ति

२१३	१	९
३८		

(ताप्रतौ २१३ इत्येतस्स स्थाने ३१३ इति पाठः ।) पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लध्दे उवरिमविर-लणाए अव-णिदे अप्पिदभागहारो होदि १५७५। एदेण समयपबध्दे भागे हिदे अप्पिददव्वमागच्छदि ।

८५२

२१३

‘धुवरासितिभाग चदुब्भागादि मज्झिमविरलणं हेट्ठिमविरलणं च णादूण उवरि सव्वत्थ वत्तव्वं । णवरि तिसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चडिय बध्ददव्वभाग-हारसंदिट्ठी

३१५

४७

। चदुसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बध्ददव्व-भागहारो

१५७

५

२५९

(मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु । १५७५ इति पाठः ।) । पंचसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बध्ददव्वभागहारो (२५८

३१५

५७

। छट्ठसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बध्ददव्वभागहारो) ।

१५७

५

३१३

सत्तसमयाहियतिण्णिगुण- हाणीओ उवरि चडिदूण बध्ददव्वभागहारो ।

२२५

४९

एवमट्ठ-णव-दससमयाहियाओ कमेण णेदव्वं जाव चउत्थगुणहाणिं चडिदो ति । तत्थ चरिमभागहारो उच्चदे । तं जहा-

७
८

एदं रुवाहियं गंतूण जदि रुवपरि-हाणी लब्धदि तो रुवूणणोण्णब्भ-त्थरासिसत्तभागम्मि किं लभामो
त्ति

< पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको उपरिम
विरलनमेंसे घटा देनेपर विवक्षित भागहार होता है- $904/8 + 38/38 = 293/38$; $9 \times 9 (293/38$
 $= 382/293$; $9-382/293 = 9504/293$ । इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर विवक्षित द्रव्य आता
है-- $6300 (9504/293 = 322 | >$

< ध्रुवराशिके तृतीय भाग व चतुर्थ भाग आदि तथा मध्यम तथा अधस्तन विरलन राशिको
जानकर आगे सर्वत्र प्ररुपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि तीन समय अधिक तीन
गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके भागहारकी संदृष्टि $394/80$ है । चार समय अधिक तीन
गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार संदृष्टि, $9504/259$, पांच समय अधिक तीन
गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार ($394/50$, छह समय अधिक तीन गुणहानियां
आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार) $9504/393$, और सात समय अधिक तीन गुणहानियां
आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार $224/89$ है । इसी प्रकार आठ, नौ और दस समय
आदिकी अधिकताके क्रमसे चतुर्थ गुणहानि प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । उनमें अन्तिम
भागहारको कहते हैं । वह इस प्रकार है-एक अधिक इतना ($9/8$) जाकर यदि एक अंककी हानि
पायी जाती है तो एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागमें वह कितनी पायी जावेगी, इस
प्रकार >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

१	१	९
५		
८		

(ताप्रतौ)

२	१	९
५		
८		

इति पाठः ।) पमाणेण फलगणितमिच्छामोवट्टिय लध्दे अवणिदे अप्पिददव्व-भागहारो होदि

२
१
५

। अधवा, चत्तारिगुणहाणीओ चडिदाओ त्ति चत्तारि रुवाणि विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा रुवूणेण रुवूण्णोण्ण-भत्थरासिमोवट्टिदे भागहारो होदि

२
१
५

। एदेण समयपबध्दे भागे हिदे चत्तारि-गुणहाणीओ चडिदूण बध्ददव्वसंचओ होदि ।

१५०
०

पुणो समयाहियचत्तारिगुणहाणीयो चडिय बध्दसमयपबध्दभागहारो रुवूण-ण्णोण्णभत्थरासिस्स पण्णारसभागो किञ्चुणो होदि । तं जहा पुव्वभागहारं विरलेदूण समयपबध्दं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि पुव्वं भणिददव्वं होदि । पुणो एत्थ एगरुवध-रिदे (अ-क-प्रत्योः 'धरिदं' इति पाठः ।)

१५०
०

। पंचचरिमगुणहाणिचरिसणिसेगेण

१४४

भागो हिदे लधे धुवरासी होदि

१२५

१२

। एदेण समकरणे कीरमाणे णडुरुवपमाणं उच्चदे । तं जहा- रुवाहिय-धुव-रासिमेत्तध्दाणं गंतूण
जदि एगरुवपरिहाणी लब्धदि तो उवरिमविरलण-

< फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सप्तम
भागमेसे घटा देनेपर विवक्षित द्रव्यका भागहार होता है- $(६४ - १) (७ = ९; ९ \times १ (१५/८ =$
 $७२/१५ = २१/५$ । अथवा चार गुणहानियां आगे गयी हैं, अतः चार अंकोंका विरलन करके दुगुणा
करे । पश्चात् उन्हें परस्पर गुणित करनेसे प्राप्त हुई राशिमेंसे एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें
भाग देनेपर उक्त भागहार होता है- $२/१ \times २/१ \times २/१ \times २/१ = १६ - १ = १५; ६४ - १ = ६३; ६३$
 $(१५ = २१/५$ । इसका समय प्रबद्धमें भाग देनेपर चार गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका
संचय होता है-- $६३०० (२१/५ = १५००$ । >

< पुनः एक समय अधिक चार गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये समय-प्रबद्धका भागहार
एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके पन्द्रहवें भागसे कुछ कम होता है । वह इस प्रकारसे पूर्व
भागहारका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति पूर्वोक्त द्रव्य आता
है । अब यहां एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यमें पंचचरम गुणहानिके चरम निषेकका भाग देनेपर जो
लब्ध हो वह धुवराशि स्वरूप होता है- $१५०० (१४४ = १२५/१२$ । इससे समीकरण करनेपर नष्ट
अंकोंका प्रमाण कहते हैं । वह इस प्रकार है- एक अधिक धुव राशि प्रमाण स्थान जाकर यदि एक
अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलन प्रमाण स्थानोंमें यह कितनी पायी >